रविवार 14 नवंबर, 2021

विषय — नश्वर और अमर

स्वर्ण पाठ: उत्पत्ति 1 : 26

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"

उत्तरदायी अध्ययन: यूहन्ना 6 : 25-29, 35

25 और झील के पार उस से मिलकर कहा, हे रब्बी, तू यहां कब आया?
26 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने
अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।
27 नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है,
जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।
28 उन्होंने उस से कहा, परमेश्वर के कार्य करने के लिये हम क्या करें?
29 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया; परमेश्वर का कार्य यह है, कि तुम उस पर, जिसे उस ने भेजा है, विश्वास करो।
35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर
विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. भजन संहिता 100 : 1-5

1 हे सारी पृथ्वी के लोगों यहोवा का जयजयकार करो!
2 आनन्द से यहोवा की आराधना करो! जयजयकार के साथ उसके सम्मुख आओ!
3 निश्चय जानो, कि यहोवा ही परमेश्वर है। उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी
प्रजा, और उसकी चराई की भेड़ें हैं॥
4 उसके फाटकों से धन्यवाद, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो, उसका धन्यवाद करो,
और उसके नाम को धन्य कहो!

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है॥

2. मरकुस 6 : 34 (और यीशु) *केवल*

34 और यीशु...

3. मरकुस 7 : 24 (गया)-37

24 ... सैदा के देशों में आया; और एक घर में गया, और चाहता था, कि कोई न जाने; परन्तु वह छिप न सका।
25 और तुरन्त एक स्त्री जिस की छोटी बेटी में अशुद्ध आत्मा थी, उस की चर्चा सुन कर आई, और उसके पांवों पर गिरी।
26 यह यूनानी और सूरूफिनीकी जाति की थी; और उस ने उस से बिनती की, कि मेरी बेटी में से दुष्टात्मा निकाल दे।
27 उस ने उस से कहा, पहिले लड़कों को तृप्त होने दे, क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना उचित नहीं है।
28 उस ने उस को उत्तर दिया; कि सच है प्रभु; तौ भी कुत्ते भी तो मेज के नीचे बालकों की रोटी का चूर चार खा लेते हैं।
29 उस ने उस से कहा; इस बात के कारण चली जा; दुष्टात्मा तेरी बेटी में से निकल गई है।
30 और उस ने अपने घर आकर देखा कि लड़की खाट पर पड़ी है, और दुष्टात्मा निकल गई है॥
31 फिर वह सूर और सैदा के देशों से निकलकर दिकपुलिस देश से होता हुआ गलील की झील पर पहुंचा।
32 और लोगों ने एक बहिरे को जो हक्ला भी था, उसके पास लाकर उस से बिनती की, कि अपना हाथ उस पर रखे।
33 तब वह उस को भीड़ से अलग ले गया, और अपनी उंगलियां उसके कानों में डालीं, और थूक कर उस की जीभ को छूआ।
34 और स्वर्ग की ओर देखकर आह भरी, और उस से कहा; इप्फत्तह, अर्थात खुल जा।
35 और उसके कान खुल गए, और उस की जीभ की गांठ भी खुल गई, और वह साफ साफ बोलने लगा।
36 तब उस ने उन्हें चिताया कि किसी से न कहना; परन्तु जितना उस ने उन्हें चिताया उतना ही वे और प्रचार करने लगे।
37 और वे बहुत ही आश्चर्य में होकर कहने लगे, उस ने जो कुछ किया सब अच्छा किया है; वह बहिरों को सुनने, की, और गूंगों को बोलने की शक्ति देता है॥

4. प्रेरितों के काम 20 : 7-12

7 सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।
8 जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीये जल रहे थे।
9 और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, और जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया।
10 परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है।
11 और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया।
12 और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई॥

5. रोमियो 8 : 12-25

12 सो हे भाइयो, हम शरीर के कर्जदार नहीं, ताकि शरीर के अनुसार दिन काटें।
13 क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे, तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रीयाओं को मारोगे, तो जीवित रहोगे।
14 इसलिये कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।
15 क्योंकि तुम को दासत्व की आत्मा नहीं मिली, कि फिर भयभीत हो परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिस से हम हे अब्बा, हे पिता कह कर पुकारते हैं।
16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।
17 और यदि सन्तान हैं, तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, जब कि हम उसके साथ दुख उठाएं कि उसके साथ महिमा भी पाएं॥
18 क्योंकि मैं समझता हूं, कि इस समय के दु:ख और क्लेश उस महिमा के साम्हने, जो हम पर प्रगट होने वाली है, कुछ भी नहीं हैं।
19 क्योंकि सृष्टि बड़ी आशाभरी दृष्टि से परमेश्वर के पुत्रों के प्रगट होने की बाट जोह रही है।
20 क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई।
21 कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी।
22 क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ाओं में पड़ी तड़पती है।
23 और केवल वही नहीं पर हम भी जिन के पास आत्मा का पहिला फल है, आप ही अपने में कराहते हैं; और लेपालक होने की, अर्थात अपनी देह के छुटकारे की बाट जोहते हैं।
24 आशा के द्वारा तो हमारा उद्धार हुआ है परन्तु जिस वस्तु की आशा की जाती है जब वह देखने में आए, तो फिर आशा कहां रही? क्योंकि जिस वस्तु को कोई देख रहा है उस की आशा क्या करेगा?
25 परन्तु जिस वस्तु को हम नहीं देखते, यदि उस की आशा रखते हैं, तो धीरज से उस की बाट जोहते भी हैं॥

6. 1 यूहन्ना 3 : 1-3

1 देखो पिता ने हम से कैसा प्रेम किया है, कि हम परमेश्वर की सन्तान कहलाएं, और हम हैं भी: इस कारण संसार हमें नहीं जानता, क्योंकि उस ने उसे भी नहीं जाना।
2 हे प्रियों, अभी हम परमेश्वर की सन्तान हैं, और अब तक यह प्रगट नहीं हुआ, कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं, कि जब वह प्रगट होगा तो हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उस को वैसा ही देखेंगे जैसा वह है।
3 और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है, जैसा वह पवित्र है।

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 428 : 22-23

महान आध्यात्मिक तथ्य को सामने लाना चाहिए कि मनुष्य है, पूर्ण और अमर नहीं।

2. 195 : 11-14

हर एक को तय करने का बिंदु यह है कि क्या यह एक नश्वर मन है या एक अमर मन है, जो एक कारण है। हमें तत्वमीमांसा विज्ञान और इसके दिव्य सिद्धांत के लिए पदार्थ के आधार का त्याग करना चाहिए।

3. 303 : 21-21 *अगला पृष्ठ*

यह विश्वास कि पीड़ा और आनंद, जीवन और मृत्यु, पवित्रता और अपवित्रता, मनुष्य में घुलमिल जाती है, - वह नश्वर, भौतिक मनुष्य भगवान की समानता है और वह स्वयं एक निर्माता है, - एक घातक त्रुटि है।

ईश्वर, स्वयं की छवि और समानता के बिना, एक गैर-बराबरी, या मन अप्रभावित होगा। वह अपने स्वयं के स्वभाव के गवाह या सबूत के बिना होगा। आध्यात्मिक मनुष्य ईश्वर की छवि या विचार है, एक ऐसा विचार जो न तो खो सकता है और न ही अपने ईश्वरीय सिद्धांत से अलग हो सकता है। जब भौतिक ज्ञान के प्रति अनुभूतियां हुईं, तब प्रेरितों ने यह घोषणा की कि कुछ भी उसे ईश्वर, मीठे भाव और जीवन और सत्य की उपस्थिति से अलग नहीं कर सकता।

यह ज्ञान और असत्य विश्वास है, भौतिक वस्तुओं पर आधारित है, जो आध्यात्मिक सौंदर्य और गुडई को छिपाते हैं। यह समझ में आया, पॉल ने कहा: "न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रादित्य, न वर्तमान, न भविष्य, न समृति, न ऊंचाई, न यशैरी और न नो और सृष्टि, हमें भगवान के प्रेम से ...।" अलग कर संभव है। " यह क्रिश्चियन साइंस का सिद्धांत है: उस दिव्य प्रेम को उसकी अभिव्यक्ति, या वस्तु से वंचित नहीं किया जा सकता है; वह आनन्द दु:ख में नहीं बदल सकता, क्योंकि दु:ख आनन्द का स्वामी नहीं है; वह अच्छाई कभी स्पष्ट नहीं कर सकता; वह पदार्थ कभी भी मन उत्पन्न नहीं कर सकता है और न ही जीवन का परिणाम मृत्यु है। पूर्ण पुरुष - भगवान द्वारा शासित, उनका सिद्ध सिद्धांत - पाप रहित और शाश्वत है

सद्भाव इसके सिद्धांत द्वारा निर्मित होता है, इसके द्वारा नियंत्रित होता है और इसके साथ रहता है। ईश्वरीय सिद्धांत मनुष्य का जीवन है। इसलिए मनुष्य का सुख भौतिक इन्द्रिय के अधीन नहीं है। सत्य त्रुटि से दूषित नहीं होता है। मनुष्य में सामंजस्य उतना ही सुंदर है जितना कि संगीत में, और कलह अप्राकृतिक, असत्य है।

4. 312 : 14-22

लोग एक साकार यहोवा की भावना पर आनंदित हो जाते हैं, हालांकि उनके दिलों में प्रेम की एक चिंगारी विरले ही होती है; फिर भी ईश्वर प्रेम है, और प्रेम अर्थात् ईश्वर के बिना अमरता प्रकट नहीं हो सकती। नश्वर सत्य को समझे बिना विश्वास करने का प्रयास करते हैं, जबकि ईश्वर सत्य है। नश्वर दावा करते हैं कि मृत्यु अवश्यंभावी है, लेकिन मनुष्य का शाश्वत सिद्धांत सदा-वर्तमान जीवन है। नश्वर एक सीमित व्यक्तिगत ईश्वर में विश्वास करते हैं; जबकि ईश्वर अनंत प्रेम है, जो असीमित होना चाहिए।

5. 475 : 5-27 *अगला पृष्ठ*

उत्तर। —आदमी भौतिक नहीं है; वह मस्तिष्क, रक्त, हड्डियों और अन्य भौतिक तत्वों से बना नहीं है। पवित्रशास्त्र हमें सूचित करता है कि मनुष्य परमेश्वर की छवि और समानता में बना है। सामग्री वह समानता नहीं है। आत्मा की समानता आत्मा के विपरीत नहीं हो सकती। मनुष्य आध्यात्मिक और परिपूर्ण है; और आध्यात्मिक और परिपूर्ण होने के कारण, उसे इस तरह से क्रिश्चियन साइंस में समझना चाहिए। आदमी विचार है, प्रेम की छवि; वह काया नहीं है। वह ईश्वर का यौगिक विचार है, जिसमें सभी सही विचार शामिल हैं; भगवान की छवि और समानता को दर्शाता है कि सभी के लिए सामान्य शब्द; विज्ञान में पाई जाने वाली सचेत पहचान, जिसमें मनुष्य ईश्वर या मन का प्रतिबिंब है, और इसलिए शाश्वत है; जो परमात्मा से अलग नहीं है; जिसे देवता से एक भी गुण नहीं मिला है; जो अपने आप में कोई जीवन, बुद्धिमत्ता और न ही रचनात्मक शक्ति रखता है, बल्कि आध्यात्मिक रूप से वह सब कुछ दर्शाता है जो उसके निर्माता का है।

"फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं; और वे समुद्र की मछलियों, और आकाश के पक्षियों, और घरेलू पशुओं, और सारी पृथ्वी पर, और सब रेंगने वाले जन्तुओं पर जो पृथ्वी पर रेंगते हैं, अधिकार रखें।"

मनुष्य पाप, बीमारी और मृत्यु के लिए अक्षम है। वास्तविक मनुष्य पवित्रता से विदा नहीं कर सकता, न ही परमेश्वर, जिसके द्वारा मनुष्य का विकास किया गया है, पाप करने की क्षमता या स्वतंत्रता प्रदान करता है। एक नश्वर पापी भगवान का आदमी नहीं है। नश्वर अमर के नकली हैं। वे दुष्ट की संतान हैं, या एक बुराई, जो घोषणा करती है कि मनुष्य धूल में या भौतिक भ्रूण के रूप में शुरू होता है। दिव्य विज्ञान में, ईश्वर और वास्तविक मनुष्य ईश्वरीय सिद्धांत और विचार के रूप में अविभाज्य हैं।

अपनी अंतिम सीमा तक आग्रह करने वाली त्रुटि स्वयं नष्ट हो जाती है। त्रुटि यह दावा छोड़ देगी कि आत्मा शरीर में है, कि जीवन और बुद्धि पदार्थ में हैं, और यह सामग्री मनुष्य है। ईश्वर मनुष्य का सिद्धांत है, और मनुष्य ईश्वर का विचार है। इसलिए मनुष्य न तो नश्वर है और न ही भौतिक। नश्वर गायब हो जाएंगे, और अमर होंगे, या भगवान की संतान, मनुष्य के एकमात्र और अनन्त सत्य के रूप में दिखाई देंगे। मुर्दा भगवान के बच्चे

नहीं हैं। उनके पास कभी भी पूर्ण राज्य नहीं था, जिसे बाद में फिर से हासिल किया जा सकता है। वे नश्वर इतिहास की शुरुआत से थे, "पाप में कल्पना की और अधर्म में माता के गर्भ में लाया।" मृत्यु दर अंततः अमरता में निगल जाती है। पाप, बीमारी, और मृत्यु को उन तथ्यों को जगह देनी होगी जो अमर आदमी के हैं।

इसे जानें, नश्वर, और ईमानदारी से मनुष्य की आध्यात्मिक स्थिति की तलाश करें, जो सभी भौतिक स्वार्थ से अप्रासंगिक है। याद रखें कि शास्त्र नश्वर मनुष्य के बारे में कहते हैं: "मनुष्य की आयु घास के समान होती है, वह मैदान के फूल की नाईं फूलता है, जो पवन लगते ही ठहर नहीं सकता, और न वह अपने स्थान में फिर मिलता है।"

6. 428 : 23-29

हमें हमेशा अस्तित्व की चेतना को धारण करना चाहिए, और जल्द ही या बाद में, मसीह और ईसाई विज्ञान के माध्यम से, हमें पाप और मृत्यु पर नियंत्रण रखना चाहिए। मनुष्य की अमरता के प्रमाण अधिक स्पष्ट हो जाएंगे, क्योंकि भौतिक विश्वासों को छोड़ दिया जाता है और होने के अमर तथ्यों को स्वीकार किया जाता है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी

सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6